

DPN 6943

Title: वर्षापरा / VARṢĀ PAṆA

Run. No. 7668

Cat. No.

Micro. No.

Subject क्रि. / Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. / नेपालभाषा समाप्ति वाक्यम् /

Size in cms. 7.5 x 17.5

Folios 6

Lines (in a page) 7

new in colophon portion.

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor फणीन्द्रान वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place Phamindra Rana Vijaywargya

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
१. ॐ नमः श्रीवज्र सत्वाय ॥ श्रीहोके नमस्कृत्य चतुः काय स्वरूपिणी वर्षापनं वदिष्यामि
→ वर्षापन आय ॥ सुना आय पाथ समाप्त ॥ ॥

जयान्त प्रकाशनि ।

७१. वर्षापरा

रुडं नमः श्रीवज्रसत्ताय ॥ श्रीरुद्रकं नमस्कृत्य च ४ कायसूत्रविधि
वर्षापनं वदिष्यामि इति ॥ यथा गृह्यसूत्रेण ॥ यथा मंगलवशात् श्री
सूत्रज्ञानवान् सर्वपूजाय कृत्वा सैव्यतिक्रान्तिदिनैः समुद्र
शुक्लपक्षे मंगलदिने ॥ यथा विदुः शिवसंगमस्य वास्तुविधानं के
रुयात् ॥ अथ वर्षापनं विधिक्रमः ॥ यथा अक्षदलत्रयं कर्त्तुं काकस
माकत्रं तत्र मध्यमकावर्जं ॥ इति ॥ कर्त्तुं श्रीवज्रसत्ताय नमः ॥
कृत्वा नमः ॥ श्रीवज्रसत्ताय नमः ॥ कर्त्तुं श्रीवज्रसत्ताय नमः ॥

वर्षापरा

प्रसादीन्द्ररत्नः वज्राचाम

कपालवर्धनार्थं, अंकुसमृजयिणी, ॐ नमो भगवते नमो नमो
 मन्त्रकवाहसमर्पणं, अत्रिद्वयकाकारं वनलकीनविह्वलं
 अधर्वद्वयजगद्वर्ध, विष्णवज्जकमोलिनी, यथा मुदा दहान् कार्त्त
 उमन्त्रकवाहसमर्पणं, अत्रिद्वयकाकारं वनलकीनविह्वलं ॥ १
 अधर्वद्वयजगद्वर्ध, विष्णवज्जकमोलिनी, यथा मुदा दहान् कार्त्त
 ली, मधुनादिविरुधिर्ग, व्याघ्रचर्मनिवसनं कपायमकटा
 र्त्तमं, अधर्वाहवर्धविह्वलं काधदृष्टानि त्रीकर्म, अष्टमं अ

क्षी नागनाजानीलिवर्धनं, अर्जुनवाहसुकि, तक्रक, कक्राटक
 यथा मद्रापय, सर्वपालकलिक, भीमानीलपीन, तक्रक, रुद्रिग
 पीन, धूम, धूमना, विप्रपीन, कर्णारिपदा, लगवता सुनिनी
 कमाना, अक्रामार्गयमाना, सीतासं, प्रमाणं व्यग्रारुगवान्नी
 लवधर्वरायराधिरयकनं, दक्षिणधूमन्त्रककु, वामरुलिम
 धूमयो, उद्धवक्र, गन्धमर्प, विह्वलं वरायानक, त्रकं वसुधनिर्
 मुदा दहान् ममपुत्रा, वाताहीकलमा, जिह्वा, जानदयस्य विह्वल

कथन कत्वा सप्तधा श्री गणेश की प्रवृत्ति हाम गवा क नृपकी
न पत्रिता वत्रिष्ट कि न सदिता प्र दया वदि स दस ॥ ० ॥ उं जं म न
ताय हं नं हं सा हा ॥ उं वीं सा की य हं नं हं सा हा ॥ उं गं क काय
हं नं हं सा हा ॥ व वा य य २ सा हा ॥ उं कं क की ट काय हं नं हं सा हा ॥ ३
उं वं प घाय हं नं हं सा हा ॥ उं मं म हा य घाय हं नं हं सा हा ॥ उं स म
ख पा त्राय हं नं हं सा हा ॥ उं कं क लिकाय हं नं हं सा ॥ उं हं वं व
त्र नाय व स म धि प त्त नो ग व वी य य २ हं नं हं सा हा ॥ ० ॥ ति ग य

हृजा धम दि ग न स र्व धा म रु र्ग र्ज यं य क र्था ग्रा प तान ला द नं नो
ज नं मो नि नी स य त दि षी ॥ प ट माल य य ता प्र स्व ल क जा य ध प
त्य कि र व ति ॥ स म र्व सि ष्ठ ति ॥ वा च या व र्णी य गि न र्ग स य क र्थ
सि ष्ठा ति स व धा द कं को ना ध रा ज न च क र्ति म ति वा र्ग प त्रि ज य
व र्धु प्र ति मा स बा उ का र्ग च दि क की त मि भ्रा ग्रा र्ग क त्वा ना ग प
ति क र्ग क त्वा सा त्वा न दी ड रा य ग ग ह लि क था गि ना धा ल्य क
त्वा य मि मा रि म र्व न व भी प ति क र्ग म न न धा य व क र्थ ग र्ग

ॐ वदोपमसुखं सखी समन्तादि धीत वति धनधानमृदि
मनोपवाक्यं गतकीर्णववषयत्तु वषधनासकल
सम्यं ता सर्वसत्ता सर्वसर्वविद्याविदुर्नरे ॥ अन्तात्मीको धनप
मासावावा नाना सातातकला ननु दयहं न कवडविरा ६
शा ॥ वकीययन उँ अ वज व न लय हं स्वाहा मधुमिगवर्त्त ॥
उँ अ न काय हं स्वाहा ॥ व व नी ली उँ अ ना स की य हं स्वाहा ॥ द
की ल पी ती उँ अ न क काय हं स्वाहा ॥ पश्चिम न के उँ अ क कौटका

य हं स्वाहा उग्रधर्म उँ अ प पाय हं स्वाहा ने भन यिगी उँ अ मा
हाय पाय हं स्वाहा वाय व धु मी उँ अ मी वि पा लाय हं स्वाहा ने भय
धर्म उँ अ क लिकाय हं स्वाहा अ प वि ग्र पी ती ॥ ० ॥ ने व स खि कम
वि द र्थ म डे गि ग य ये न मी य डे वा म क न रु ल ग रि न य न द कि म क न प्र
सा र्य च लि म नु प ७ प्र उँ अ न क वा स कि न क क क कौ ट क य प्र म ख पा
ले क लि क द व ति म हा द व ति सा म सि सि द लु ध न म हा द धु ध न अ
य लाल ह ल र न दा प न दा सा ग ल मा हा सा ग न ग य म हा र्म फ गी की

मित्रललाकि, सुत्रपमहासूत्रप, रुद्राहिक, मय्युद्धमिहिवि। ॐ नमः
 जगत्कृष्णमाह नो मधियमि सर्वसुवर्णं रुद्रस्य का। ० ॥ वृद्धम
 वाचगतामवानुनायसर्ववतिषुषय, गन्तुं ददमीधवयत गवत्यरा
 खगमसुनंदनिहि। ज्ञात्वा मत्तुमदुष्टवर्षीयनं कुलप्यननिहिनाम
 धीनिपलिसमाक० अधर्माद्यादि॥ ॥ वृत्तिमन्त्रयः ७० श्रीनवल्लिद
 लार्थकायदात्रपवा ननयज्ञयत्वा सीतायासताकरीष० ॥ क्रमापन विसर्जन
 माहामयादिमुत्रिययाति॥ यद्यन्यास, कनसकाय, दिनादहिनावर्कन विदि
 गवासावर्कन, दातवन्तर्कद॥ यद्यस्मिन्ति, जिमीर्षदत्तामुक्ति, विमीषजय

न॥ कोतात्रहृदय ईश्वरपुत्र, पाथकस्यमाहामययद, वलिदिनयुक्त, दिनेसनी॥
 नापीसनीइइयन सानस्य, वाम, पथकयनस्य, कर्ममात्र, कृमद्वकृन्त
 मगता, त्रयोदश, पिताया या काडः, नागदयक, नैपयिकमग, पयसा हा यजाया
 या, दिनेमाहावतिय॥ सीयना कृन्तुनरुगयया॥ दिगदडा यजाया, यकृयका
 पाथमाहायय, वकीयनयाय॥ धीनायाय याथसमाक॥ विसर्जदकनावि
 सर्वरुद्रमि, ज्ञाया रुद्रकृन्तु, मनेपियत्रवि, रानवजावाकृवर्द्धमर्षिवाया
 मगु ईश्वर, आममकायाथयाकृ, रुद्रस्य, रुद्रस्यका, नाहिदाय, यथातयास रुद्रना

पदानीन्द्रल वजाचार्य

क्रिमतककनभीषनउककोककभीषन। नितीपघापीभीषडावासहा
यकयुषभीषननेसधयानधम। अणकलिकविनपीन। यघासनकुनी
जसिहसाविनानदिनधनाकुकमुकननकप्रमयउतवउरवउ। १४१
जवाउरसथेनयानानसययकमनयप्रकसुययगु। नागुसुसथना
नागयानयमयपुडाहसी। धनयमावाके॥ नदिकसीयकुवनि। कुसीधयमा
अमुनिउमुनि। सजत्रह। नायकस। यनकम। धनकथन। कनसधयपेवर्गया॥ कुमा
यासूनीवाक। सायुसने। सग। अकन। खनकोक। खानवाययाहा। साहाकाध